## वैष्णवागम साहित्य की एक शाखा

# भागवतागम की विषयवस्तु

श्री धनञ्जय कुमार झा *

**यज्ञपरक वैदिक उपासना-पद्धति के साथ-साथ अतिथि-सत्कार की शैली में पौराणिक मन्त्रों से देवपूजा की जो पद्धति विकसित हुई वह आगम के रूप में प्रतिष्ठित हुई तथा केवल ब्राह्मणों तक सीमित न रहकर चारों वर्णों तथा स्त्रियों के लिए सुलभ हुई। पौराणिक मन्त्रों को वेद-मन्त्रों-सी प्रतिष्ठा मिली तथा इस आगम परम्परा ने समाज के सभी वर्गों को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया। वैष्णव-शाखा में आगम की तीन शाखाएँ विकसित हुईम-पाञ्चरात्र, वैखानस तथा भागवत शाखा। भागवत शाखा ने भक्ति पर अधिक जोर डाला। इसी 'भागवतागम' पर यहाँ विवेचन किया गया है।**

भारतीय अध्यात्म का गौरवशाली साहित्य दो भागों में विभक्त है- 'आगम' और 'निगम।' सामान्यतया आगम तन्त्र के लिए और निगम वेद के लिए प्रयुक्त होता है।

वेदों की महत्ता तो सर्वविदित है ही, तन्त्र भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं उच्च कोटि के साहित्य में गिने जाते हैं। इसकी प्रमाणिकता इससे सिद्ध होती है कि आगम शब्द पहले वेद के लिए प्रयुक्त होता था, परन्तु जब तन्त्रों का आविर्भाव हुआ तो वेद निगम और तन्त्र आगम के अन्तर्गत प्रयोग किया जाने लगा। जिस प्रकार वेद ईश्वर की वाणी माने जाते हैं, उसी प्रकार तन्त्र भी भगवान विष्णु, शिव, देवी की वाणी हैं और उन्ही देवताओं के नाम से वे जाने भी जाते हैं। तन्त्रों की महत्ता का वर्णन 'मत्स्य-सूक्त' में भी प्राप्त होता है कि जिस प्रकार वर्णों में ब्राह्मण, देवियों-में दुर्गा, देवताओं में इन्द्र, वृक्षों में पीपल, पर्वतों में हिमालय, नदियों में गंगा और अवतारों में विष्णु का स्थान है उसी प्रकार शास्त्रें में तन्त्र श्रेष्ठ हैं। इस प्रकार आध्यात्म विज्ञान की एक ऐसी शाखा है जिसका आश्रय लेकर सर्वथा सामान्य मनुष्य भी सांसारिक स्थिति से उपर उठकर क्रमशः उच्चतम जीवन में प्रविष्ट हो सकता है।

आगम शास्त्र परम्परा से आये सनातन धर्म का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है, और वेद के सम्पूरक हैं। निगम और आगम भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। पौराणिक ग्रन्थों में निगमागम का समन्वित रूप परिलखि होता है। ब्रह्म सूत्र में ईश्वर की सत्ता को बोध कराने के लिए **तत्तु समन्वयात्**[1] कहा गया है। इसकी सम्पुष्टि गोस्वामी तुलसीदासजी के द्वारा भी श्रीरामचरितमानस के मंगलाचरण में किया गया है-

**नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्**
**रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।**[2]

निगम अर्थात वेद जिस प्रकार कर्म, ज्ञान तथा उपासना के स्वरूप का बोध कराता है। आगम उन कर्म, ज्ञान तथा उपासना के उपाय भूत साधनों का वर्णन

*व्याख्याता, संस्कृत विभाग, जे .एम .आर. कॉलेज, पातेपुर, वैशाली, (बिहार)

1. ब्रह्मसूत्र- 1-2
2. श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड -7

करता है। इसलिए वाचस्पति मिश्र ने तत्त्ववैशारदी योगभाष्य व्याख्या में आगम शब्द की व्युत्पति- आगच्छन्ति बुद्धिम् आरोहन्ति अभ्युदयनिः श्रेयस उपायाः यस्मात् सः आगमः की है।

आगम का मुख्य लक्ष्य क्रिया का परिणाम है। वाराही तन्त्र के अनुसार आगम इन सात लक्षणों से समन्वित सृष्टि, प्रलय, देवतार्चन, सर्वसाधन, पुरश्चरण, षट्कर्म (1 शान्ति, 2 वशीकरण, 3 स्तम्भन, 4 विद्वेषण, 5 उच्चाटन और 6 मारण) साधना (ध्यान योग) है। महानिर्वाण-तन्त्र के अनुसार कलयुगी मानव मेध्य-अमेध्य अर्थात पवित्र-अपवित्र बहुधा हीन होते हैं इन्हीं के कल्याणार्थ स्वयं शङ्कर ने आगमों का उपदेश माता पार्वती को दिया है। इसलिए वर्तमान काल में आगम की पूजा पद्धति विशेष रूप से लाभदायक मानी जाती है। विद्वानों की उक्ति है- कलौ आगमसम्मतः।

उपास्य देव की भिन्नता के कारण वैदिक धर्म में आगम त्रिविध हैं-

1. वैष्णवागम 2. शैवागम 3. शाक्तागम

हयशीर्ष पाञ्चरात्र के आदिकाण्ड[3] में पच्चीस पाञ्चरात्रागम तथा दश भागवतागम की नामावली है। अग्निपुराण में यहीं के ही 25 (पच्चीस) पाञ्चरात्रगम की नामावली उद्धृत है[4]। यहाँ आगम संहिता के अर्थ में- प्रयुक्त हुआ है। यह प्रकरण पुनः परीक्षण की अपेक्षा रखता है, इसलिए यहाँ हयशीर्ष पाञ्चरात्र का और अग्निपुराण का श्लोक संग्रह कर के परीक्ष्यमान है-

हयशीर्ष पाञ्चरात्र में-

**प्रोक्तानि पाञ्चरात्रणि कल्पे कल्पे पुरा मया।**
**व्यस्तानि मुनिभिर्लोके पञ्चविंशतिसंख्यया।।**
**आद्यं समस्ततन्त्रणां हयशीर्षं प्रकीर्तितम्।**
**त्रैलोक्य मोहनं तन्त्रं वैभवं पौष्करं तथा।।**
**नारदीयं तथा तन्त्रं गार्ग्य गालवमेव च।**
**क्षीप्रश्नं शाण्डिलं तन्त्रं तन्त्रमीश्वरसंहिता।।**
**तन्त्रं भागवतं चैव शिवोक्तं विष्णु भाषितम्।**
**पद्मोक्तं पुराणं च वाराहं च तथापरम्।।**
**इमे भागवतानान्तु तथा सामान्यसंहिता।**
**व्यासोक्ता संहिता वान्या तथा परमसंहिता।। (2-8-9)**

अग्नि पुराण में-

**प्रोक्तानि पाञ्चरात्रणि पञ्चविंशतिसंख्यया।**
**हयशीर्षं तन्त्रमाद्यं तन्त्रं त्रैलोक्यमोहनम्।।**
**आत्रेयं नारसिहाख्यमानन्दाख्यं तथारुणम्।**
**बौधायनं तथार्षं च विश्वोक्तं तस्य सारतः।। (39-1-5)**

यहाँ पर ही संग्रहीत वैखानस आगम में उद्धृत वचन से भागवतागम मिश्र विभाग में अन्तर्भूत है। तीन प्रकार के यज्ञ प्रचलित हैं। वैदिक, तान्त्रिक एवं वेद-तन्त्र सम्मिलित। ऐसा श्रीमद्भागवत, देवीभागवत आदि पुराणों में वर्णित है। इस समय वैदिक, तान्त्रिक तथा उभयविध पूजा प्रकार समन्वित रूप से सम्पादित होते हैं। प्रायः सभी पुराण स्मार्तपथ का ही अनुसरण करते हैं।

विष्णु-पुराण और श्रीमद्भागवत आदि पुराण भागवत सम्प्रदाय का प्रतिनिधि ग्रन्थ है। नारद का भक्ति सूत्र भागवत भक्ति

3. हयशीर्ष पाञ्चरात्र आदिकाण्ड - 2-2-9 4. अग्निपुराण- 39-2-5

रसायन, भक्तिचन्द्रिका, हरिभक्तिरसायनसिन्धौ एवं विष्णुभक्तलता आदि भक्तिशास्त्र के ग्रन्थ भागवत-सम्प्रदाय को ही सम्प्रकाशित करते हैं। वैष्णव सम्प्रदाय भगवान विष्णु और उनके अवतरों को आराध्य माननेवाला सम्प्रदाय है। इसके अन्तर्गत मूल रूप से चार सम्प्रदाय मान्य हैं जो वर्तमान काल में ये सम्प्रदाय अपने-अपने प्रमुख आचार्यों के नाम से प्रवृत्त है। प्रायः ये आचार्य दाक्षिणात्य हैं-

1. **श्री सप्रदाय-** इस सम्प्रदाय की आद्या विष्णु पत्नी महालक्ष्मी मानी जाती है। इसके प्रमुख आचार्य रामानुज हुए जिनके नाम से आज रामानुज सम्प्रदाय प्रसिद्ध है।
2. **ब्रह्म सम्प्रदाय**- इसके आद्य प्रवर्त्तक चतुरानन ब्रह्मा हैं। इसके प्रमुख आचार्य माधव हैं, जिनके नाम से यह माध्व सम्प्रदाय कहलाता है।
3. **रुद्र सम्प्रदाय** - इसके आद्य उपदेशक देवाधिदेव महादेव हैं। इसके प्रमुख आचार्य वल्लभ हुए जो वर्तमानकाल में वल्लभ सम्प्रदाय के नाम से प्रचलित है।
4. **कुमार सम्प्रदाय** - इसके आदि प्रवर्त्तक सनत्कुमार हैं। इस सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य निम्बार्काचार्य हुए, जो वर्तमान में निम्बार्क सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध है।

इसके अलावा मध्यकालीन भारत के उत्तरी भाग में ब्रह्म (माध्व) सम्प्रदाय के अन्तर्गत ब्रह्म माध्व गौडेश्वर सम्प्रदाय प्रचलित हुए जिसके- प्रवर्त्तक आचार्य श्रीमन्महाप्रभु चैतन्यदेव हुए। एवं श्री सम्प्रदाय के अन्तर्गत रामानन्द सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक श्री रामानन्दाचार्य जी ने सर्व धर्म समभाव्य की भावना को वल देते हुए दिखे। इन्होंने कबीर, रहीम आदि अन्त्य वर्ण के व्यक्तियों को भी भक्ति का उपदेश दिया। इसी सम्प्रदाय में ही गोस्वामी तुलसीदास हुए जिन्होंने त्रिकालजयी श्री रामचरितमानस की रचना करके भागवतागम दर्शन की महिमा को जन-जन तक पहुँचाया। भाग वतागम में भक्ति का प्रमुख स्थान है। वैष्णव धर्म का दृष्टिकोण सार्वजनिक और सर्वव्यापक है। गीता के अनुसार मोक्ष प्राप्ति तपस्या और संन्यास से ही अनिवार्य नहीं है, अपितु मनुष्य गृहस्थ रहते हुए भी निष्काम कर्म करते हुए भक्ति से मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

***

## "पाञ्चरात्र साहित्य का विस्तार" पृष्ठ 36 का शेषांश

बाद व्यवस्थित परम्परा के रूप में प्राचीन समय से वैष्णव समाज में समरस रूप से प्रवर्तित था।[28]

वैष्णव सम्प्रदाय आदि काल से प्रचलन में है। निश्चित रूप से सम्प्रदाय के विकास में महाभारत, भगवद्गीता, विष्णुपुराण, भागवत, मनुस्मृति एवं शाण्डिल्य, वशिष्ठ एवं विष्णु का विशेष योगदान है। पाञ्चरात्रागम शास्त्र वैष्णवों के आचार का प्रतिपादक शास्त्र कहा जा सकता है। व्यावहारिक दृष्टि से भी वैष्णवों आचार तथा व्यवहार पर पाञ्चरात्र आगम संहिताओं का प्रबल प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। तो स्पष्ट है कि यह प्रधान रूप से विष्णु भक्तिमूलक सगुणमूर्ति आराधना विषय का सर्वश्रेष्ठ शास्त्र है।जिसमें मूर्ति आराधन क्रम में परब्रह्म को न केवल प्रतिमा में प्रतिस्थापित ही करते हैं अपितु उसका जीवत्वापादन भी करते हैं।[29]

।। ह्रीं विष्णवे नमः।।

***

28. चौधरी, राघव प्रसाद, (1987) पाञ्चरात्रागम, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, पृ० 02
29. नारद-संहिता अ. 15, पृ०-188.